''उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य एवं जनजाति की छात्राओं के मूल्यों एवं नारी समानता मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''

– नेकराम, प्राचार्य एवं व्याख्याता, श्री इंदिरा गाँधी मेमोरियल पी जी महाविधालय, पीलीबंगा
डॉ हरीश कंसल, प्राचार्य, विनायक महाविद्यालय, श्री विजयनगर, श्री गंगानगर

सारांश :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य ''उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य एवं जनजाति की छात्राओं के मूल्यों एवं नारी समानता मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' करना है। इस शोध अध्ययन में श्रीमती रेखा रानी अग्रवाल द्वारा निर्मित ''वैविध्य मूल्य प्रश्नावली'' तथा डॉ. रमा तिवारी द्वारा निर्मित ''नारी समानता मनोवृत्ति मापदण्ड'' का प्रयोग किया गया है। परिणामों की गणना करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तकनीकी शब्द – मूल्य, नारी समानता मनोवृत्ति।

प्रस्तावना :–

समाज की संरचना अनेक तत्वों से मिलकर बनी होती है। समाज व्यवस्था पर अनेक भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक, दार्शनिक एवं भाषायी कारकों का प्रभाव पड़ता है, इन सभी कारकों को जानने के लिए शिक्षा अनिवार्य है। शिक्षा मानव विकास की आधारशिला है। शिक्षा आंतरिक बुद्धि व विकास की निरंतर प्रक्रिया है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा एक व्यापक व गतिशील प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य जीवन को प्रगतिशील, सांस्कृतिक व सभ्य बनाना है।

छात्रों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा ही सुव्यवस्थित समाज का निर्माण करने में योग देती है। शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थी विभिन्न जाति, धर्म व वर्ग के होते हैं, तथा उनकी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं जीवन मूल्य भी भिन्न–भिन्न होते हैं। इन जातियों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र आदि वर्ग के विद्यार्थी होते हैं। इनमें से कुछ जातियों को उच्च वर्ग में तथा कुछ जातियों को निम्न वर्ग में रखा जाता है। आधुनिक काल में उच्च वर्ग को सामान्य वर्ग कहते हैं, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य आते हैं जबकि अनुसूचित जाति व जनजाति शुद्र वर्ग में आती है। जिन व्यक्तियों के गुण तथा कर्म एक से होते हैं वे सब एक ही वर्ण के सदस्य माने जाते हैं। वर्ण शब्द की उत्पत्ति वृ ;वृत–चरणैद्ध धातु से हुई थी, जिसका अर्थ है वरण या चुनाव करना। इस दृष्टि से व्यक्ति अपने लिये जिस व्यवसाय का चुनाव करता था, उसी के अनुसार उसके वर्ण का निर्धारण होता था। वर्ण के आधार पर विभाजित समूहों में जो व्यक्ति जिस परिवार में जन्म लेता वही उसकी जाति कहलाती। और इस तरह यह विभाजित वर्णव्यवस्था जाति प्रथा में बदलने लगी तथा अन्य जातियाँ मध्यम श्रेणी तथा निम्न श्रेणी की जातियों में गिनी जाने लगी।

इस प्रकार जातिगत व्यवस्था इतनी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में पहुंच गई कि समाज का विभाजिन समाज के लिए एक प्रबल समस्या बन गया और इस समस्या का एक पक्ष यह था कि संस्तरण में उच्च जातियों द्वारा निम्न जाति के शोषण को प्रोत्साहन मिलने लगा, उन्हें समाज में कहीं सम्मान नहीं दिया जाता था। चाहे उनमें से कोई कितना ही बुद्धिमान व प्रतिभाशाली व्यक्ति होगा। इसके कारण उनके जीवन मूल्यों में भी परिवर्तन आने लगा।

मूल्य :–

मूल्यों का सम्बन्ध व्यक्ति की स्वाभाविक एवं जन्मजात प्रकृति से नहीं होता वरन् उन्हें व्यक्ति सामाजिक अन्तःक्रिया और समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा सीखता है। प्रत्येक समाज की संस्कृति व जीवन मूल्यों के आधार पर ही व्यक्ति समाज व सामूहिक जीवन में सामन्जस्य स्थापित करता है।

नारी समानता मनोवृत्ति :–

वर्तमान समय में नारी ने अपने वास्तविक महत्व को जानना और पहचानना शुरु कर दिया है और वह अपनी गिरी हुई दशा के प्रति सचेत हुई है। इसका कारण है कि स्वतन्त्र भारत नारी जागरण का युग बन गया है और सामान्य एवं जनजाति की स्त्री–शिक्षा के सभी क्षेत्रों में विलक्षण क्रान्ति परिलक्षित हो रही है।

स्त्रियों की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन के बावजूद अत्याचारी एवं अप्रगतिशील विचारों वाला पुरुष वर्ग नारी की महत्ता को स्वीकार नहीं करता है, किन्तु सरकार और प्रगतिशील विचारों वाला पुरुष वर्ग नारी की समानता के पक्ष में है।

यहां नारी समानता से अभिप्राय है कि नारी को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार हो, मिलकत एवं व्यवसाय आदि सभी जगह पुरुष समान अधिकार प्राप्त हों। जाति के कारण उनमें भेदभाव न रखा जाये। अतः शोधकर्त्ता ने सदियों से चले आ रहे इस जाति के भेदभावपूर्ण रूढ़िगत ढांचे में स्त्रियों के मूल्यों एवं समानता के अधिकारों के प्रति उनकी मनोवृत्ति को जानने की अभिशंसा रखते हुए इस लघुशोध प्रबन्ध के विषय का चुनाव किया है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व :–

वर्तमान समय में सामान्य जाति की पढ़ने वाली छात्राओं के सैद्धांतिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक मूल्यों में परिवर्तन आ रहा है, जिसमें जनजाति की छात्राएँ भी शामिल हैं। सामान्यतः हमारे समाज में विद्यालयों में पढ़ने वाली जनजाति की छात्राओं को निम्न दृष्टि से देखा जाता है। साथ ही अभिभावकों में भी यह धारणा बन गई है कि समाज में जनजाति की छात्राओं की अपेक्षा सामान्य जाति की छात्राएँ अधिक सफल होती हैं तथा उनके जीवन मूल्यों में भी परिवर्तन हो सकता है। अतः क्या वास्तव में यह धारणा प्रभावी है या नहीं? अतः इसी संदर्भ में इस समस्या का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना आवश्यक हो गया है ताकि इसका पता लगाया जा सके और यह बात सही है तो सामान्य

जाति में एवं जनजाति में आवश्यक सुधार हेतु सुझाव दिये जा सकें, जिससे कि अभिभावकों में तथा छात्राओं में इसके प्रति जागरूकता लाई जा सके।

इसके अलावा वर्तमान समय तक सामान्य जाति एवं जनजाति की छात्राओं के मूल्यों एवं नारी समानता मनोवृत्ति से सम्बन्धित शोध बहुत कम हुए है। अतः उस उद्देश्य से भी यह शोधकार्य औचित्य से पूर्ण है।

अतः इस प्रकार उपरोक्त अनुच्छेदों से प्रस्तुत शोध कार्य की उपयोगिता, महत्व, अनिर्वायता तथा औचित्य स्पष्ट हो जाता है। इसी कारण से शोधकर्त्ता द्वारा इस समस्या का चयन किया गया है।

समस्या कथन :–

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन निम्न प्रकार से है –

''उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य एवं जनजाति की छात्राओं के मूल्यों एवं नारी समानता मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।''

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य :–

शोधकर्त्ता ने अपने शोध में निम्नलिखित उद्देश्य सम्मिलित निर्धारित किए हैं –

1. सामान्य वर्ग व जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सामान्य वर्ग व जनजाति वर्ग की छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ :–

शोधकर्त्ता ने अपने शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की हैं :–

1. सामान्य वर्ग व जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सामान्य वर्ग व जनजाति वर्ग की छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया है :–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन को केवल श्रीगंगानगर जिले तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन को उच्च माध्यमिक स्तर तक सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत शोध को निजी विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन को 100 छात्राओं तक सीमित रखा गया है।

शोध में प्रयुक्त विधि :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श :–

1. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के अन्तर्गत श्रीगंगानगर जिले की 100 छात्राओं को चयनित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के अन्तर्गत सामान्य वर्ग की 50 छात्राओं एवं जनजाति वर्ग की 50 छात्राओं को चयनित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने तथ्यों के संकलन हेतु **श्रीमती रेखा रानी अग्रवाल द्वारा निर्मित ''वैविध्य मूल्य प्रश्नावली'' तथा डॉ. रमा तिवारी द्वारा निर्मित ''नारी समानता मनोवृत्ति मापदण्ड''** का प्रयोग किया है।

1. वैविध्य मूल्य प्रश्नावली (1986) (श्रीमती रेखा रानी अग्रवाल द्वारा निर्मित) :–

इस प्रश्नावली में कुल चार मूल्यों का समावेश किया गया है। प्रत्येक मूल्य से सम्बन्धित अलग–अलग प्रकार के प्रश्न पूछे गये हैं। इस प्रकार इसमें कुल 28 प्रश्न पूछे गये हैं। मूल्यों में भिन्न चार मूल्यों का समावेश किया गया है :–

(1) भौतिक एवं अभौतिक उद्दीपक
(2) आवश्यक वस्तु का तात्कालिक एवं विलम्ब तृष्टीकरण
(3) वर्तमान एवं भविष्य का दिगविन्यास
(4) पूंजीवादी अभिवृत्ति एवं प्रतिष्ठा मूल्य

प्रत्येक मूल्य के सात–सात प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस प्रकार कुल 28 प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिये दो विकल्प दिये गये हैं, दो विकल्पों में से अपनी पसंद के विकल्प पर सही का चिन्ह् लगाना होता है और एक विकल्प को खाली छोड़ना होता है।

2. नारी समानता मनोवृत्ति मापदंड (1988) (डॉ. रमा तिवारी द्वारा निर्मित) :–

छात्राओं की समानता मनोवृत्ति का पता लगाने के लिये डॉ. रमा तिवारी द्वारा प्रमाणीकृत नारी समानता मनोवृत्ति मापदंड का प्रयोग किया गया है। इस प्रमापनी के माध्यम से छात्राओं की नारी समानता के प्रति मनोवृत्ति का सरलता से पता लगाया जा सकता है।

इस मापनी में कुल 40 प्रश्न पूछे गये हैं, जिसमें प्रत्येक प्रश्न के आगे 'हाँ' या 'नहीं' का कॉलम बना हुआ है, जिसमें जो सही लगे, उसके आगे सही का चिन्ह् लगाना होता है।

शोध में प्रयुक्त साँख्यिकी :–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

तथ्यों का विष्लेषण :–

सारणी संख्या 1 सामान्य वर्ग व जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों को दर्शाती हुई सारणी

क्रं. सं.	विवरण	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	सामान्य वर्ग की छात्राएँ	50	72.98	3.11	2.12	0.01 एवं 0.05
2.	जनजाति वर्ग की छात्राएँ	50	71.64	3.23		

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी में सामान्य वर्ग एवं जनजाति वर्ग की छात्राओं, जिनकी संख्या क्रमशः 50 व 50 है, के मूल्यों सम्बन्धी दत्तों को विश्लेषित किया गया है। मूल्यों का मध्यमान क्रमशः 72.98 व 71.64 तथा प्रमाप विचलन 3.11 व 3.23 प्राप्त हुआ है। इनके आधार पर दत्तों का टी–मूल्य ज्ञात करने पर 2.12 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 के सारणी मान से अधिक एवं 0.01 के सारणी मान से कम है। अतः इस आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना को 0.05 स्तर पर स्वीकृत एवं 0.01 स्तर पर अस्वीकृत कर कहा जा सकता है कि ''सामान्य वर्ग व जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों में आंशिक अन्तर है।''

सारणी संख्या 2 सामान्य वर्ग व जनजाति वर्ग की छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति को दर्शाती हुई सारणी

क्रं. सं.	विवरण	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	सामान्य वर्ग की छात्राएँ	50	5.26	2.11	0.625	0.01 एवं 0.05
2.	जनजाति वर्ग की छात्राएँ	50	5.16	1.89		

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी में सामान्य वर्ग एवं जनजाति वर्ग की छात्राओं, जिनकी संख्या क्रमशः 50 व 50 है, के नारी समानता मनोवृत्ति सम्बन्धी दत्तों को विश्लेषित किया गया है। नारी समानता मनोवृत्ति के मध्यमान क्रमशः 5.26 व 5.16 तथा प्रमाप विचलन 2.11 व 1.89 प्राप्त हुआ है। इनके आधार पर दत्तों का टी–मूल्य ज्ञात करने पर 0.625 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 एवं 0.01 के सारणी मान से कम है। अतः इस आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना को स्वीकृत कर कहा जा सकता है कि ''सामान्य वर्ग व जनजाति वर्ग की छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।''

शोध निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण किया गया तथा इसके पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए गए :–

परिकल्पना 1 :–

''सामान्य वर्ग व जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।''

उपरोक्त परिकल्पना को स्वीकृत कर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामान्य वर्ग व जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों में आंशिक अन्तर है। मध्यमानों पर दृष्टिपात करे तो ज्ञात होता है कि सामान्य वर्ग की छात्राओं के मूल्य जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों से उच्च है।

परिकल्पना 2 :–

''सामान्य वर्ग व जनजाति वर्ग की छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।''

उपरोक्त परिकल्पना को स्वीकृत कर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामान्य वर्ग की छात्राओं का नारी समानता मनोवृत्ति का स्तर जनजाति वर्ग की छात्राओं के नारी समानता मनोवृत्ति के स्तर से उच्च है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना, विपिन (2003) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
2. गुप्ता, आर.सी. भट्ट (2005) : ''शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा
3. कोल, लोकेश (2006) : ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली'', विकास पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली
4. भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर मीनाक्षी (2008) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', आर.एल. बुक डिपो, मेरठ

5. माथुर, डॉ. एस.एस. (2010) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
6. पाण्डे, के.पी. (2007) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', दोआबा हाऊस प्रकाशन, नई दिल्ली
7. सरीन, डॉ. शशिकला (2007) : ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2